

Amīrī Ahlī Sunnat Ke 163 Ishaadāt (Hindi)



Spine Size : 250
Weekly Booklet : 250



पृष्ठान 22



अमीरे अहले सुन्नत इक़तरी अज़लाना मौलाना मुहम्मद इल्फ़ान अज़म क़ादिरि रज़वी رحمۃ اللہ علیہ के
मुद्रितकृत पुराणों का मन्बूअ

द्वितीय आवृत्ति

अमीरे अहले सुन्नत के 163 इशादात

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनुल इल्मिया

(दरग़ाह इस्लामी इन्डिया)



أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़
लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर
अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले । (سُتْرُفَ ج ١ ص ٤٠ دارالفक्रियरोत)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना
व बकीअ
व मग़िफ़रत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : अमीरे अहले सुन्नत के 163 इर्शादात

सिने तबाअत : 1444 हि., 2022 ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : मक्तबतुल मदीना

मदनी इल्लिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।





ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "अमीरे अहले सुन्नत के 163 इर्शादात"

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़े मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)। (तारिख़ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفکر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये।





أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अमीरे अहले सुन्नत के 163 इर्शादात

दुआए जा नशीने अमीरे अहले सुन्नत : या रब्ल मुस्तफ़ा ! जो कोइ 20 सफ़हात का रिसाला : “अमीरे अहले सुन्नत के 163 इर्शादात” पढ़ या सुन ले उसे सच्चा अशिके रसूल बना और दीन की खिदमत का ख़ूब जज़्बा अता फ़रमा ।

أَمِينُ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक उस पर दस रहमतें भेजता है । (मुस्लम, स 172, हदीथ: 912)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

दौरे हाज़िर की अज़ीम इल्मी व रूहानी शख़िस्सियत शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रत अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ उन हस्तियों में से एक हैं जिन्हें अल्लाह पाक ने बे पनाह इल्मो हिक्मत से नवाज़ा है । आप के मल्फूज़ातो इर्शादात सुन कर लोग अख़्लाको किरदार के पैकर बनते और दीनो दुन्या की ढेरों बरकतें समेटते हैं, आइये हम भी इन के इर्शादात सुन कर अपने इल्मो अमल में इज़ाफ़े की कोशिश करते हैं ।

अमीरे अहले सुन्नत के 163 इर्शादात

(मदनी मुज़ाकरा 19 शव्वालुल मुकर्रम 1440 हि. के फ़रामीन)





«1» मोमिन का हर काम ऐसा होना चाहिये जिस में आखिरत का भला हो और कोई ऐसी बात न हो जिस में आखिरत का नुक़सान हो। «2» अपने अन्दर दीनी दर्द पैदा करने के लिये प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की दीने इस्लाम के लिये कुरबानियों का मुतालअ कीजिये। «3» अपनी जान बचाने के लिये दूसरे को नहीं फंसाना चाहिये। «4» जो मुझे मेरी ग़लती बताए वोह मेरा मोहसिन है। (हम सब का येह ज़ेहन होना चाहिये।) «5» अपने मुंह से अपने आप को अल्लामा या अल्लिम कहलवाने की बजाए अज़िज़ी करनी चाहिये। «6» एक अल्लिम व मुफ़ती को भी एहयाउल इलूम घोल घोल कर पीनी चाहिये إِنْ شَاءَ اللهُ फ़तावा में निखार आ जाएगा।

(मदनी मुज़ाकरा 20 शव्वालुल मुकर्रम 1440 हि. के फ़रामीन)

«7» नमाज़ जल्दी जल्दी पढ़ने की बजाए तज्वीदो क़िराअत का लिहाज़ करते हुए ज़ाहिरी व बातिनी आदाब के साथ पढ़िये। «8» अज़ान के बा'द बस एक ही काम, नमाज़ नमाज़ बस नमाज़।

«9» अहले इल्म येह ग़ौर करे कि क्या बे पढ़ा फ़र्द मुझे हक़ीर लगता है या नहीं? और अल्लाह पाक से डरे कि कहीं सामने वाला अल्लाह पाक की बारगाह में मक्बूल न हो। «10» हमारे बुजुर्ग सादा काग़ज़ का अदब कर गए, काश! हम भी अपनी क़लम, कुतुब का अदब करें। «11» जिस को नमाज़ में लज़्ज़त आती है उस के लिये इस से बड़ी कोई ने'मत नहीं।

(मदनी मुज़ाकरा 10 मुहर्मुल हराम 1441 हि. के फ़रामीन)

«12» इम्तिहान जितना सख़्त होता है सनद भी उतनी ही आ'ला मिलती है। «13» डॉक्टर एक ही होना चाहिये क्यूं कि इस तरह वोह हमारी बदनी





कैफ़िय्यात जान लेता है। (कि कौन सी दवा मुवाफ़िक़ होती है और कौन सी नहीं।) ﴿14﴾ अल्लाह ने क़सम खाई यह कहना बे अदबी है, यूं कहना चाहिये कि अल्लाह पाक ने क़सम याद फ़रमाई। ﴿15﴾ अगर घर वाले दाढ़ी रखने से मन्अ करें तो अपने अच्छे किरदार और आंसूओं के ज़रीए मनाइये बद अख़्लाकी से मुआमला मज़ीद बिगड़ सकता है।

(मदनी मुज़ाकरा 11 मुहर्मुल ह़राम 1441 हि. के फ़रामीन)

﴿16﴾ ज़ालिम और जुल्म की उम्र कम होती है।

﴿17﴾ अगर मज़्लूम से मुआफ़ी मांगना आज मुश्किल लगता है तो आख़िरत का मुआमला मुश्किल तरीन है।

(मदनी मुज़ाकरा 29 शव्वाल 1441 हि., 20 जून 2020 ई. के फ़रामीन)

﴿18﴾ टेक्स्ट मेसेज, वीडियो क्लिप और यादगार मनाज़िर वगैरा के साथ तारीख़ मअ़ माह व सिन लिखना निहायत मुफ़ीद रहता है और इस से यादगार बाकी रहती है।

﴿19﴾ लुत्फ़ अन्दोज़ होने के लिये सूरज गहन (या चांद गहन) की तसावीर बनाना अच्छी बात नहीं।

﴿20﴾ टेन्शन हज़ार बीमारियों को जनम देता है।

(मदनी मुज़ाकरा 6 जुल का'दतिल ह़राम 1441 हि.,

27 जून 2020 ई. के फ़रामीन)

﴿21﴾ अपनी मरज़ी से इलाज करने की बजाए हमेशा डॉक्टर के मश्वरे से इलाज करना चाहिये।

﴿22﴾ घर में दा'वते इस्लामी का चेनल चलता रहेगा तो आप के बच्चों की इस्लाह का सामान होता रहेगा। اِنَّ سَاءَ اللّٰهُ الْكٰرِمُ





﴿23﴾ तबीअतें मुख़्तलिफ़ होती हैं लिहाज़ा अहादीसे मुबारका में तच्चीज़ कर्दा इलाज बिगैर तबीब का मश्वरा लिये करने की मुमानअत है ।

(मदनी मुज़ाकरा 13 जुल का'दतिल हराम 1441 हि.,

4 जूलाई 2020 ई. के फ़रामीन)

﴿24﴾ वालिदैन को चाहिये कि सब से पहले अपने बच्चों को दीन की ज़रूरी ता'लीम दें ।

﴿25﴾ बचपन ही से अपनी बच्ची को हया का दर्स दीजिये । मां को चाहिये कि (चलती फिरती) बच्ची को चुस्त पाजामा न पहनाए ।

﴿26﴾ मियां बीवी येह मुआहदा (Pact) कर लें कि आपस में होने वाली नाराज़ी का अपने अपने वालिदैन वगैरा को नहीं बताएंगे ।

﴿27﴾ ऐसा सुवाल न किया करें जिस से सामने वाला किसी का ऐब खोल दे या ग़ीबत के गुनाह में जा पड़े ।

(मदनी मुज़ाकरा 20 जुल का'दतिल हराम 1441 हि.,

11 जूलाई 2020 ई. के फ़रामीन)

﴿28﴾ नए घर में सब से पहले कुरआने करीम रखना अच्छी बात है ।

﴿29﴾ नए घर में शिफ़्ट होते वक़्त क़ब्र में होने वाली शिफ़्टिंग को याद कीजिये ।

﴿30﴾ ओपरेशन करवाना हो तो कम अज़ कम दो सर्जनों से मश्वरा कर लेना चाहिये ।

﴿31﴾ पांचों नमाज़ें पाबन्दी से पढ़ने की आदत बनाने का अस्ल वज़ीफ़ा येह “एहसास” है कि नमाज़ मेरे रब ने मुझ पर फ़र्ज़ की है ।

﴿32﴾ ऐसा काम या अन्दाज़ मत इख़्तियार कीजिये जिस से लोग दीन से दूर हों ।





(मदनी मुजाकरा 27 जुल का'दतिल हराम 1441 हि.,

18 जूलाई 2020 ई. के फ़रामीन)

﴿33﴾ जानवर के ज़ब्ह होते वक़्त तमाशा बनाने की बजाए जानवर पर रहम खाते हुए अपनी मौत को याद करना चाहिये ।

﴿34﴾ रूहानी इलाज में “ताक़त” है ।

(मदनी मुजाकरा 30 जुल का'दतिल हराम 1441 हि.,

21 जूलाई 2020 ई. के फ़रामीन)

﴿35﴾ ज़ियादा बातें करना इन्सान के वक़ार को दाग़दार करता है ।

﴿36﴾ अ़ाम तौर पर हर एक को “ख़ामोश तबीअत इन्सान” अच्छा लगता है ।

﴿37﴾ बा'ज अवक़ात एक गुनाह “कई गुनाह” करवाता है ।

﴿38﴾ हर बच्चे की पैदाइश (Birth) के साथ रुख़सत (या'नी मौत भी) खड़ी होती है ।

(मदनी मुजाकरा 1 जुल हिज्जतिल हराम 1441 हि.,

22 जूलाई 2020 ई. के फ़रामीन)

﴿39﴾ क़र्जा टेन्शन लाता और नींद उड़ाता है ।

﴿40﴾ कुरबानी का जानवर ऐसी जगह ज़ब्ह कीजिये जहां किसी पैदल या सुवार को तक्लीफ़ न हो ।

﴿41﴾ मज़हबी लोगों को ज़ियादा मोहतात रहना चाहिये कि सफ़ेद कपड़े पर दाग़ दूर ही से नज़र आ जाता है ।

﴿42﴾ “یاالله” 49 बार पढ़ कर जानवर पर दम कर दीजिये, **إِنْ شَاءَ اللهُ** नज़र लगने और मुख़लिफ़ बीमारियों से हिफ़ाज़त होगी ।





(मदनी मुजाकरा 2 जुल हिज्जतिल हराम 1441 हि.,

23 जूलाई 2020 ई. के फ़रामीन)

﴿43﴾ मैं येह चाहता हूं कि हमारे बच्चे बच्चे के ज़ेहन में येह बैठ जाए कि
“مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ” अल्लाह पाक के आख़िरी नबी हैं।

﴿44﴾ हर वोह बात जिस से गुनाहों का दरवाज़ा खुले उस से इज्तिनाब
करना (या'नी बचना) ज़रूरी है। (मदनी मुजाकरा, 8 मुहर्रमुल हराम 1436 हि.)

(मदनी मुजाकरा 3 जुल हिज्जतिल हराम 1441 हि.,

24 जूलाई 2020 ई. के फ़रामीन)

﴿45﴾ मेरे नज़्दीक पढ़ा लिखा वोह है जो कम अज़ कम देख कर कुरआने
करीम दुरुस्त पढ़ लेता हो।

﴿46﴾ अगर अ़ालिम से ग़लती से ग़लत मस्अला बयान हो जाए तो
इज़ाला करने (अपनी ग़लती तस्लीम करते हुए दुरुस्त मस्अला बताने) में
शरमाना नहीं चाहिये। (ख़ौफ़े खुदा वाले इलमा ऐसे ही करते हैं।)

﴿47﴾ जानवर ज़ब्ह होते और तड़पते वक़्त अपनी मौत और नज़्अ की
तक्लीफ़ों के ख़यालात पैदा करने चाहिएं ताकि आख़िरत की याद आए।

﴿48﴾ उर्दू ज़बान सीखनी चाहिये क्यूं कि हमारा बहुत सा दीनी लिट्रेचर
उर्दू में है।

﴿49﴾ मुसीबत में (मिलने वाले सवाब की खुशी में) मुस्कुराना “कमाल”
है।

﴿50﴾ आदमी तो आदमी अगर “जानवर” भी नर्म मिज़ाज हो तो अच्छा
लगता है।

﴿51﴾ बच्चा हो या बड़ा जिस को प्यार दोगे तो प्यार पाओगे।





(मदनी मुज़ाकरा 4 जुल हिज्जतिल हराम 1441 हि.,
25 जूलाई 2020 ई. के फ़रामीन)

﴿52﴾ जिन मनाज़िर को देखने पर न सवाब हो न गुनाह उन्हें देखने का भी क़ियामत के दिन हिसाब होगा ।

﴿53﴾ ऐसे लोगों की सोह़बत में बैठना चाहिये जिन के आ'माल के साथ साथ अक़ाइदो नज़रिय्यात भी सो फ़ीसदी कुरआनो हदीस के मुताबिक़ हों ।

﴿54﴾ इस दौर में मेरे पास सुन्निय्यत का मे'यार “आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ” हैं जो येह फ़रमाएं उस पर आंखें बन्द हैं ।

(मदनी मुज़ाकरा 5 जुल हिज्जतिल हराम 1441 हि.,
26 जूलाई 2020 ई. के फ़रामीन)

﴿55﴾ जानवर को ज़ब्द के वक़्त होने वाली तक्लीफ़ के मुक़ाबले में इन्सान को रूह निकलते वक़्त कई गुना ज़ियादा होती है ।

﴿56﴾ फुज़ूल बातों से बचने का ज़ेहन होगा तो गुनाहों भरी बातों से बच भी सकेंगे ।

(मदनी मुज़ाकरा 6 जुल हिज्जतिल हराम 1441 हि.,
27 जूलाई 2020 ई. के फ़रामीन)

﴿57﴾ जो जानवर राहे खुदा में कुरबान किया जाता है वोह बड़ा “ख़ुश नसीब” है ।

﴿58﴾ दीनी तुलबाए किराम और इस्लामी मुतालआ करने वालों को दीनी कुतुब मुम्किन हो तो अपनी जेब ही से ख़रीदनी चाहिएं اِنْ شَاءَ اللهُ
बरकतों में इज़ाफ़ा होगा ।





﴿59﴾ अल्लाह पाक और उस के आखिरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में जो अच्छा है हकीकत में वोही अच्छा है ।

(मदनी मुज़ाकरा 7 जुल हिज्जतिल हराम 1441 हि.,
28 जूलाई 2020 ई. के फ़रामीन)

﴿60﴾ हो सकता है छोटी नज़र आने वाली नेकी ही जन्नत में ले जाए और छोटा नज़र आने वाला एक गुनाह ही जहन्नम में पहुंचा दे ।

﴿61﴾ बा'ज अवकात छोटी नेकी बड़ी नेकियों तक पहुंचा देती है ।

﴿62﴾ अफ़सोस ! गुनाह और बुरे काम को बुरा समझने का रुज़्हान भी कम होता जा रहा है ।

(मदनी मुज़ाकरा 9 जुल हिज्जतिल हराम 1441 हि.,
30 जूलाई 2020 ई. के फ़रामीन)

﴿63﴾ दाढ़ी शरीफ़ की सुन्नत बद अख़्लाक़ियों और गालियों वग़ैरा कई तरह की बुराइयों से बचाती है ।

﴿64﴾ शरीअत आप के पीछे नहीं चलेगी, (आप) खुद शरीअत के पीछे चलिये ।

(मदनी मुज़ाकरा 10 जुल हिज्जतिल हराम 1441 हि.,
31 जूलाई 2020 ई. के फ़रामीन)

﴿65﴾ मुसल्मान अक्ल के नहीं दिने इस्लाम के पाबन्द हैं ।

﴿66﴾ हम अक्ल के नहीं खुदा के बन्दे हैं ।

﴿67﴾ वोही अक्लमन्द है जिस की समझ में “दीन” आ जाए ।

﴿68﴾ बकरी मैं मैं करती है तो उस पर छुरी चलती है और जब बन्दा मैं मैं करता है तो वोह लोगों में “रुस्वा” होता है ।





(मदनी मुजाकरा 11 जुल हिज्जतिल हराम 1441 हि.,

1 अगस्त 2020 ई. के फ़रामीन)

- ﴿69﴾ जो अल्लाह पाक की बारगाह में झुकता है वोह बुलन्दी पाता है ।
- ﴿70﴾ जो अल्लाह पाक और उस के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की फ़रमां बरदारी में लगा रहता है, दुन्या उस की ख़िदमत में लगी रहती है ।
- ﴿71﴾ जिस के हां कुरबानी नहीं होती, हो सके तो उस को (सब से) पहले “कुरबानी का गोशत” दीजिये ।
- ﴿72﴾ अगर किसी मांगने वाले को गोशत नहीं देना तो झिड़के बिगैर उस से अच्छे अन्दाज़ से मा'ज़िरत कर लीजिये ।
- ﴿73﴾ दा'वते इस्लामी के लिये कुरबानी की खालें जम्अ करना हमारा “मक्सद” नहीं “ज़रूरत” है, हमारा मक्सद “नेकी की दा'वत” है ।
- ﴿74﴾ कुरबानी की खालें इकठ्ठी करने में “बा जमाअत नमाज़” नहीं छूटनी चाहिये । खाल जाती हो तो जाए नमाज़ हरगिज़ न जाए ।
- ﴿75﴾ दुन्यावी लज़ीज़ खानों की हिर्स की बजाए जन्नत के लज़ीज़ खानों की हिर्स कीजिये ।
- ﴿76﴾ अल्लाह करीम के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की उम्मत में पैदा होना “अनमोल ने'मत” है ।

(मदनी मुजाकरा 18 जुल हिज्जतिल हराम 1441 हि.,

8 अगस्त 2020 ई. के फ़रामीन)

- ﴿77﴾ गिज़ा कितनी ही उम्दा हो उस का हृद से ज़ियादा इस्ति'माल नुक़सान देह है ।
- ﴿78﴾ तेज़ आंधी या शदीद बारिश वगैरा के मनाज़िर से लुत्फ़ अन्दोज़ होने की बजाए इन से इब्रत हासिल करनी चाहिये ।





﴿79﴾ 15 अगस्त का दिन “यौमे तशक्कुर” या’नी अल्लाह पाक का शुक्र अदा करने का दिन है कि उस ने हमें आजादी की ने’मत अता फरमाई । (ब तगय्युर)

(मदनी मुजाकरा 25 सफरुल मुजफ्फर 1442 हि.,
12 अक्तूबर 2020 ई. के फरामीन)

﴿80﴾ हमारी हज़ारों इबादतें अल्लाह पाक की किसी एक ने’मत के हज़ारवें हिस्से के शुक्र का हक़ अदा नहीं कर सकतीं ।

﴿81﴾ मोहसिन (या’नी एहसान करने वाले) का एहसान सारी उम्र मानना चाहिये ।

﴿82﴾ इज़्ज़त दो इज़्ज़त मिलेगी ।

﴿83﴾ अज़िज़ी व इन्किसार के ज़रीए ही किसी शख्स के “दिल” में दाख़िल हुवा जा सकता है ।

(मदनी मुजाकरा 4 रजब 1442 हि., 18 फ़रवरी 2021 ई. के फ़रामीन)

﴿84﴾ क़ब्रिस्तान “इब्रत” का मक़ाम है ।

﴿85﴾ हर “नेक” अल्लाह पाक का वली नहीं होता जब कि अल्लाह पाक का हर “वली” ज़रूर “नेक” होता है ।

(मदनी मुजाकरा 13 रजबुल मुरज्जब 1442 हि.,
25 फ़रवरी 2021 ई. के फ़रामीन)

﴿86﴾ बे नमाज़ी “नेक शख्स” नहीं है ।

﴿87﴾ बच्चों को “मोबाइल” से दूर रखने में ही अफ़ियत है ।





(मदनी मुजाकरा 15 रजबुल मुरज्जब 1442 हि.,
27 फरवरी 2021 ई. के फरामीन)

﴿88﴾ अपनी नेकियां छुपाना “बेहतरीन काम” है।

﴿89﴾ चेहरे का हुस्न (नूर) “अल्लाह पाक की इबादत” से होता है।

﴿90﴾ अगर आप किसी को समझाना चाहते हैं तो हकीमाना अन्दाज़ अपनाइये कि इस्लाह फ़क़त इसी तरह हो सकती है वरना ज़ारिहाना अन्दाज़ ज़िद पैदा करता है।

﴿91﴾ सोशल मीडिया पर किसी को समझाना, समझाना नहीं बल्कि उसे “ज़लील” करना है।

﴿92﴾ इस्लाम अपने मुसलमान भाइयों से हुस्ने जून रखने की ता’लीम देता है।
(मदनी मुजाकरा, 3 रबीउल आख़िर 1438 हि.)

﴿93﴾ महब्बते औलिया बढ़ाने का एक तरीका यह है कि औलियाए किराम से महब्बत रखने वालों की सोहबत इख़्तियार की जाए।

(मदनी मुजाकरा, 30 रबीउल अब्वल 1438 हि.)

﴿94﴾ किसी को शोहरत हासिल हो जाना इस बात की दलील नहीं कि उसे रिज़ाए इलाही की मन्ज़िल भी हासिल हो गई।

(मदनी मुजाकरा, 22 रबीउल आख़िर 1438 हि.)

﴿95﴾ जो मसाइबो आलाम (या’नी मुसीबतों और ग़मों) पर सब्र करने में काम्याब हो जाता है वोह अल्लाह पाक की रहमतों के साए में आ जाता है।
(खुदकुशी का इलाज, स. 20)

﴿96﴾ दूसरों का अन्जाम देख कर अपने लिये इब्रत के मदनी फूल चुन लेना अक्ल मन्दी है।
(मदनी मुजाकरा, 23 रबीउल आख़िर 1438 हि.)





﴿97﴾ दिल की सख्ती का एक सबब जिक्रे इलाही के इलावा जियादा कलाम (गुफ्तगू) करना भी है। (मदनी मुजाकरा, 10 मुहर्मुल हराम 1436 हि.)

﴿98﴾ बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ के वाकिआत सुन कर سُبْحَانَ اللَّهِ कहने के साथ साथ उन की सीरत पर अमल करने की कोशिश भी की जाए।

(मदनी मुजाकरा, 5 जुमादल उख्रा 1438 हि.)

﴿99﴾ आबे जमजम का एक कतरा, पानी से भरी देग में भी डाल दिया जाए तो बरकत के लिये काफ़ी है। (मदनी मुजाकरा, 20 जुमादल ऊला 1438 हि.)

﴿100﴾ अपनी इस्लाह की कोशिश जारी रखिये क्यूं कि जो खुद नेक हो वोह दूसरों के बारे में भी नेक गुमान (या'नी अच्छे खयालात) रखता है जब कि जो खुद बुरा हो उसे दूसरे भी बुरे ही दिखाई देते हैं।

(शैतान के बा'ज हथियार, स. 35)

﴿101﴾ अच्छी निय्यत से मुआफ़ करना कारे सवाब है, मुआफ़ करने का एक दुन्यवी फ़ाएदा येह भी हो सकता है कि जिस को मुआफ़ किया जाए उस के दिल से मुआफ़ करने वाले का बुग़्जो कीना (दुश्मनी) निकल जाए।

(मदनी मुजाकरा, 21 मुहर्मुल हराम 1436 हि.)

﴿102﴾ अपने बच्चों के सामने इस निय्यत से **अल्लाह अल्लाह** किया करें कि वोह भी **अल्लाह अल्लाह** करने वाले बन जाएं।

(मदनी मुजाकरा, 14 जुमादल ऊला 1438 हि.)

﴿103﴾ नमाज़ में लिबास उम्दा से उम्दा तरीन होना चाहिये।

(मदनी मुजाकरा, 7 जुमादल ऊला 1438 हि.)

﴿104﴾ आप की एक मुस्कुराहट किसी की नस्लों को संवार सकती है और आप की एक बेरुखी किसी की नस्लों को राहे रास्त से कोसों दूर कर सकती है।

(मदनी मुजाकरा, 11 मुहर्मुल हराम 1436 हि.)





﴿105﴾ सब के साथ शफ़क़त और हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आएंगे तो लोग आप से महब्बत करेंगे। महब्बत दो, महब्बत लो, नफ़रत करोगे तो नफ़रत मिलेगी।
(मदनी मुज़ाकरा, 17 रबीउल आख़िर 1438 हि.)

﴿106﴾ वक़्त वोह अनमोल हीरा है जो एक बार ज़ाएअ़ होने के बा'द दोबारा नहीं मिल सकता जब कि दौलत ज़ाएअ़ हो जाए तो फिर मिल सकती है।
(मदनी मुज़ाकरा, 5 रबीउल आख़िर 1438 हि.)

﴿107﴾ माल का लुटेरा चोर है और उस से बचने के कई ज़रीए हैं क्यूं कि वोह नज़र आता है जब कि नेकियों का लुटेरा शैतान है और येह नज़र नहीं आता लिहाज़ा इस से नेकियां बचाने के लिये ज़ियादा कोशिश करने की ज़रूरत है।
(मदनी मुज़ाकरा, यकुम मुहर्मुल हराम 1436 हि.)

﴿108﴾ जिस चीज़ की निस्बत हरमैने तय्यिबैन (या'नी मक्का व मदीना) और बुजुर्गाने दीन से हो जाए शरीअ़त के दाएरे में रहते हुए उस का ख़ूब अदब कीजिये।
(मदनी मुज़ाकरा, 9 मुहर्मुल हराम 1436 हि.)

﴿109﴾ मैं तलबए किराम को इल्मे दीन हासिल करने का हरीस होने के साथ साथ मदनी कामों का हरीस भी देखना चाहता हूं।
(मदनी मुज़ाकरा, 11 रबीउल अब्वल 1438 हि.)

﴿110﴾ गुनाह करने वाले का गुनाह काबिले नफ़रत है मगर वोह खुद काबिले हमदर्दी है और उसे समझाने की ज़रूरत है।
(मदनी मुज़ाकरा, यकुम रबीउल आख़िर 1438 हि.)

﴿111﴾ मौत को याद करने के लिये किसी ऐसी जगह “अल मौत” लिखिये जिस पर आप की नज़र पड़ती रहे।
(मदनी मुज़ाकरा, 7 मुहर्मुल हराम 1436 हि.)





﴿112﴾ अपने अन्दर कुव्वते बरदाश्त पैदा करने की कोशिश कीजिये कि जब भी आप के मिजाज के खिलाफ़ कोई बात हो तो आप अपने गुस्से को कन्ट्रोल करते हुए सब्र करने में काम्याब हो जाएं ।

(मदनी मुजाकरा, 12 रबीउल अब्वल 1438 हि.)

﴿113﴾ हरकत में बरकत है कि जो पानी चलता है वोह ताज़ा रहता है और जो रुका रहता है ख़राब हो जाता है ।

(मदनी मुजाकरा, 9 रबीउल अब्वल 1438 हि.)

﴿114﴾ बेटा आलिम हो और बाप ग़ैरे आलिम, फिर भी बेटे पर अपने बाप का एहतिराम लाज़िम है, एहतिराम करेगा तो दोनों जहां में सईद (या'नी खुश नसीब) होगा । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ**

(मदनी मुजाकरा, 11 मुहर्रमुल हराम 1436 हि.)

﴿115﴾ इमामा शरीफ़ बांधने वाला इस की बरकत से गुनाहों से बाज़ रहता है और उस के किरदार में भी निखार आ जाता है ।

(मदनी मुजाकरा, 21 सफ़रुल मुजफ़्फ़र 1436 हि.)

﴿116﴾ ऐसे महल्ले में मकान लेना चाहिये जहां मस्जिद ग्यारहवीं व बारहवीं मनाने वालों की हो । (मदनी मुजाकरा, 2 रबीउल आख़िर 1437 हि.)

﴿117﴾ आप दरे मुस्तफ़ा के असीर (या'नी कैदी) बन जाएं तो बिग़ैर दौलत के अमीर हो जाएंगे और **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** आप को सुकूने क़ल्ब की दौलत भी मिलेगी ।

(मदनी मुजाकरा, 3 रबीउल आख़िर 1436 हि.)

﴿118﴾ इल्मे दीन का अनमोल ख़ज़ाना मुतालाए के ज़रीए भी हाथ आता है ।

(मदनी मुजाकरा, 9 रबीउल अब्वल 1438 हि.)





«119» जिस से बन पड़े वोह अपने सफ़ेद पोश रिश्तेदार या यतीम बच्चों की कफ़ालत का जिम्मा ले और उन की मदद इस तरह करे कि उन्हें भी मा'लूम न हो कि हमारी मदद करने वाला कौन है ।

(मदनी मुज़ाकरा, 9 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि.)

«120» मालदारों के पास उ़मूमन इल्मे दीन कम होता है शायद इसी लिये वोह ग़रीबों को हक़ीर जानने में मुब्तला हो जाते हैं ।

(मदनी मुज़ाकरा, 23 रबीउ़ल आख़िर 1438 हि.)

«121» मिस्वाक को बे अदबी से बचाते हुए इस का एहतिराम कीजिये कि येह सुन्नत अदा करने का आला है । (मदनी मुज़ाकरा, 30 रबीउ़ल अब्वल 1438 हि.)

«122» बातिन को उजला करने के लिये सच्ची तौबा कर लीजिये ।

(मदनी मुज़ाकरा, 5 रबीउ़ल अब्वल 1436 हि.)

«123» मर्कज़ी मजलिसे शूरा (के अराकीन) दा'वते इस्लामी के माई बाप हैं इन पर बे जा तन्क़ीद करने के बजाए इन के साथ मिल कर दीन का ख़ूब काम करना चाहिये । (मदनी मुज़ाकरा, 6 रबीउ़ल आख़िर 1437 हि.)

«124» जो इल्मे दीन से शग़फ़ रखते हैं मुझे उन पर बहुत प्यार आता है ।

(मदनी मुज़ाकरा, 4 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि.)

«125» अल्लाह पाक की राह में माल ख़र्च करना नफ़्स पर बहुत गिरां (या'नी भारी) होता है इस लिये जैसे ही राहे खुदा में ख़र्च करने की निय्यत करें फ़ौरन दे दें क्यूं कि क़ल्ब (या'नी दिल) मुन्क़लिब होता (या'नी बदलता) रहता है । (मदनी मुज़ाकरा, 29 रबीउ़ल अब्वल 1437 हि.)

«126» अ़ालिमे दीन ब ज़ाहिर सादा हो मगर इल्म की वज्ह से आ़म लोगों से मुमताज़ और बेहतरीन शख़ि़सिय्यत होता है ।

(मदनी मुज़ाकरा, 12 रबीउ़ल आख़िर 1437 हि.)





﴿127﴾ खुददारी और सब्रो क़नाअत से वक़ार बुलन्द होता है ।

(मदनी मुज़ाकरा, 3 रबीउ़ल आख़िर 1437 हि.)

﴿128﴾ खाने में नमक मुनासिब मिक्दार में इस्ति'माल करना चाहिये क्यूं कि इस का ज़ियादा इस्ति'माल गुर्दी को नाकारा कर सकता है ।

(मदनी मुज़ाकरा, 21 जुल हिज्जतिल हराम 1437 हि.)

﴿129﴾ हमारे साथ कोई हुस्ने सुलूक करे या न करे, हमें हर एक के साथ हुस्ने सुलूक करना चाहिये । (मदनी मुज़ाकरा, 12 रमज़ानुल मुबारक 1437 हि.)

﴿130﴾ वोही अक्ल मन्द काम्याब है जिस ने अपनी अक्ल को अल्लाह व रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इताअत में इस्ति'माल किया ।

(मदनी मुज़ाकरा, 15 रमज़ानुल मुबारक 1437 हि.)

﴿131﴾ अज़िज़ी व नरमी इख़्तियार कीजिये اِنْ شَاءَ اللهُ आप सब की आंखों का तारा बन जाएंगे । (मदनी मुज़ाकरा, 20 रबीउ़ल आख़िर 1437 हि.)

﴿132﴾ इस्लामी बहनें जब मयके जाएं तो सिलए रेहूमी (रिशतेदारों के साथ अच्छे बरताव) की निय्यत कर लें और मयके जा कर सुसराल की ख़ामियां या सुसराल आ कर मयके की ख़ूबियां बयान न करें, اِنْ شَاءَ اللهُ घर अमन का गहवारा बना रहेगा । (मदनी मुज़ाकरा, 22 रबीउ़ल अव्वल 1437 हि.)

﴿133﴾ हींग (एक दरख़्त का गोंद Asafoetida) घर में रखने से च्यूंटियां भाग जाती हैं । (मदनी मुज़ाकरा, 2 जुल का'दतिल हराम 1437 हि.)

﴿134﴾ अल्लाह पाक की ना फ़रमानी से हर सूरत में बचना चाहिये कि गुनाह छोटा हो या बड़ा जहन्नम में झोंक सकता है ।

(मदनी मुज़ाकरा, 16 रमज़ानुल मुबारक 1437 हि.)

﴿135﴾ दुन्यावी मालो दौलत कम होने पर अफ़्सोस करने के बजाए नेकियां कम होने पर अफ़्सोस कीजिये । (मदनी मुज़ाकरा, 29 रमज़ानुल मुबारक 1437 हि.)





﴿136﴾ ग़लती तस्लीम करने से इज़्ज़त घटती नहीं, बढ़ती है ।

(मदनी मुज़ाकरा, 4 रबीउल आख़िर 1437 हि.)

﴿137﴾ किसी को समझाना भी एक फ़न है, अगर समझाना आता है तो इन्फ़रादी तौर पर समझाइये कि येह ज़ियादा फ़ाएदे मन्द है ।

(मदनी मुज़ाकरा, 27 रबीउल आख़िर 1437 हि.)

﴿138﴾ मुसल्मान हर मुआमला शरीअत के मुताबिक़ करने का पाबन्द है ।

(मदनी मुज़ाकरा, 6 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हि.)

﴿139﴾ जब तक हम ने अल्फ़ाज़ न बोले, हमारे हैं, जब ज़बान से निकल गए तो दूसरों के हो गए, वोह जो चाहें करें ।

(मदनी मुज़ाकरा, 3 जुल हिज्जतिल ह़राम 1435 हि.)

﴿140﴾ हर एक को चाहिये कि दूसरों से चीज़ें मांगने से बचे, अगर येह (न मांगने वाली) आदत पुख़्ता हो जाए तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** कई दुन्यावी फ़वाइद भी हासिल होंगे ।

(मदनी मुज़ाकरा, 20 रबीउल अब्वल 1437 हि.)

﴿141﴾ पेट भर कर खाना खाना गुनाह नहीं है अलबत्ता ज़ियादा खाने वाले का नफ़्स गुनाहों की तरफ़ ज़ियादा माइल हो सकता है ।

(मदनी मुज़ाकरा, 16 रमज़ानुल मुबारक 1437 हि.)

﴿142﴾ शर्इ मुआमलात में अपनी अट्कल (या'नी अन्दाजे) से किसी चीज़ के जाइज़ या ना जाइज़ होने का हुक्म नहीं लगाना चाहिये ।

(मदनी मुज़ाकरा, 9 मुहर्मुल ह़राम 1437 हि.)

﴿143﴾ बड़े बहन भाई बे जा रो'ब डालें तो भी छोटे बहन भाइयों को उन की इज़्ज़त करनी चाहिये अलबत्ता बड़ों को चाहिये कि वोह छोटों से प्यार करें, नरमी से पेश आएँ और शफ़क़त भरा सुलूक करें ।

(मदनी मुज़ाकरा, 9 रमज़ानुल मुबारक 1437 हि.)





﴿144﴾ कोई शख्स हमारी बुराई करे तो उस से नाराज़ होने या किसी के सामने **مَعَادُ اللَّهِ** उस की बुराई बयान करने के बजाए सब्र करें बल्कि उसे तोहफ़ा रवाना कर दें, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** अच्छे नताइज सामने आएंगे ।

(मदनी मुज़ाकरा, 14 रमज़ानुल मुबारक 1437 हि.)

﴿145﴾ गुरूरो तकब्बुर गुस्से में शिद्दत पैदा करता और हिल्मो बुर्दबारी से रोकता है ।

(मदनी मुज़ाकरा, 19 रबीउल आख़िर 1437 हि.)

﴿146﴾ ख़ौफ़े खुदा में बहने वाले आंसू दिल की सख़्ती की वजह से खुशक हो जाते हैं और दिल गुनाहों की कसरत की वजह से सख़्त होता है ।

(मदनी मुज़ाकरा, 10 जुमादल ऊला 1437 हि.)

﴿147﴾ खट्टी चीज़ें (ज़ियादा) खाने से बचना चाहिये कि इन से बलगम पैदा होता है और बलगम हाफ़िज़ा कमज़ोर करता है ।

(मदनी मुज़ाकरा, 2 मुहर्मुल ह़राम 1438 हि.)

﴿148﴾ समझदारी का तकाज़ा येह है कि मोबाइल फ़ोन में बच्चों की अम्मी या दीगर महारिम ख़वातीन की तसावीर हरगिज़ न रखी जाएं क्यूं कि मोबाइल गुम या चोरी हो सकता है और इस तरह घर वालों की तसावीर ग़ैर मर्दों के पास जाने का अन्देशा है ।

(मदनी मुज़ाकरा, 26 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1438 हि.)

﴿149﴾ जब गोश्त पकाएं तो उस में कद्दू शरीफ़, शलजम, आलू या कोई और सब्जी शामिल कर लीजिये, इस से गोश्त के मुज़िर (नुक्सान देह) असरात दूर होंगे ।

(मदनी मुज़ाकरा, 4 रबीउल अब्वल 1438 हि.)

﴿150﴾ बुजुर्गी का तअल्लुक़ इल्मो अक्ल से होता है, जवानी और बुढ़ापे से नहीं ।

(मदनी मुज़ाकरा, 8 रजबुल मुर्ज्जब 1437 हि.)





«151» किसी को अच्छे अक़ीदे और अच्छे आ'माल की तौफ़ीक़ मिलना, इस बात की अलामत है कि रब्बे करीम उस से महबूबत करता है ।

(मदनी मुज़ाकरा, 5 रबीउल अब्वल 1438 हि.)

«152» गन्दुम में जव का आटा मिला कर पकाएं तो रोटी मो'तदिल असर वाली हो जाएगी क्यूं कि जव की तासीर ठन्डी और गन्दुम की तासीर गर्म होती है ।

(मदनी मुज़ाकरा, 4 रबीउल अब्वल 1438 हि.)

«153» अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये शरीअत के दाएरे में रहते हुए शौहर को खुश करना बहुत बड़े सवाब का काम है ।

(मदनी मुज़ाकरा, 15 रजबुल मुर्ज्जब 1437 हि.)

«154» औलाद को चाहिये कि मां बाप का इलाज अपना पेट काट कर (या'नी रूखी सूखी खा कर और तंगी से गुज़ारा कर के) भी करवाना पड़े तो करवाए ।

(मदनी मुज़ाकरा, 21 मुह्रमुल ह़राम 1436 हि.)

«155» ख़ौफ़े खुदा व इश्के मुस्तफ़ा में रोना भी अल्लाह पाक की एक ने'मत है, जिसे ख़ौफ़े खुदा व इश्के मुस्तफ़ा में रोना न आए उसे (रियाकारी से बचते हुए) रोने की ब तकल्लुफ़ कोशिश करनी चाहिये ।

(मदनी मुज़ाकरा, यकुम रबीउल अब्वल 1439 हि.)

«156» किसी भी जामेए शराइत पीर से दुन्यवी काम के लिये बैअत न की जाए बल्कि नफ़्स व दिल की इस्लाह, नेक आ'माल की कसरत की तौफ़ीक़, ईमान की सलामती व दीन पर इस्तिक़ामत पाने के लिये (बैअत) की जाए ।

(मदनी मुज़ाकरा, 22 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1439 हि.)

«157» वतने अज़ीज़ हमारे लिये बहुत बड़ी ने'मत है इस की ता'मीर में





हम सब को हिस्सा लेना चाहिये ।

(मदनी मुजाकरा, 17 रमजानुल मुबारक 1437 हि. ब तगय्युर)

«158» रंग बातों से कम और सोहबत से ज़ियादा चढ़ता है, लिहाजा अच्छों की सोहबत अपनाइये । (मदनी मुजाकरा, 25 जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि.)

«159» हर मुसलमान को चाहिये कि कम अज़ कम अपने एक बेटे और बेटी को अलिम व अलिमा ज़रूर बनाए ।

(मदनी मुजाकरा, 10 मुहर्रमुल हराम 1436 हि.)

«160» येह बहुत मुश्किल है कि बन्दे के पास माल हो और दिल में उस की महबबत न हो, लिहाजा येह न कहा जाए कि मेरे दिल में माल की महबबत नहीं, अगर येह सच है तो रिया में पड़ने का खौफ़ है और अगर येह दुरुस्त न हो (या'नी दिल में माल की महबबत हो) तो झूट हो जाएगा ।

(मदनी मुजाकरा, 29 सफ़रुल मुजफ़्फ़र 1439 हि.)

«161» जो डांट डपट करते हैं, लोग उन से जान छुड़ाते और दूर भागते हैं और जो महबबत देते हैं, लोग उन को दूँडते और उन के करीब होते हैं ।

(मदनी मुजाकरा, यकुम रबीउल अब्वल 1439 हि.)

«162» चलते फिरते या लैट कर या फिर हर उस अन्दाज़ में जिस से आंखों पर जोर पड़ता हो मुतालाआ करने से बचना चाहिये कि इस से नज़र कमजोर होने का अन्देशा है । (मदनी मुजाकरा, 4 रबीउल अब्वल 1439 हि.)

«163» वालिदैन को चाहिये कि बच्चों की शादी तै करने से पहले उन की रिज़ामन्दी ज़रूर हासिल कर लें वरना शादी के बा'द घर ख़राब होने का अन्देशा रहता है ।

(मदनी मुजाकरा, 9 रबीउल अब्वल 1439 हि.)



अगले हफ्ते का रिसाला

